कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
फोन: 2327 0497, 2328 8285
E-mail: kanishkabooks@gmail.com
kanishka_publishing@yahoo.co.in

₹ 990

गंगा की सांस्कृतिक स्वर लहरियां

डॉ. मधुरानी शुक्ला
शाम्भवी शुक्ला

गंगा की सांस्कृतिक स्वर लहरियां

सम्पादक
डॉ. मधुरानी शुक्ला
शाम्भवी शुक्ला

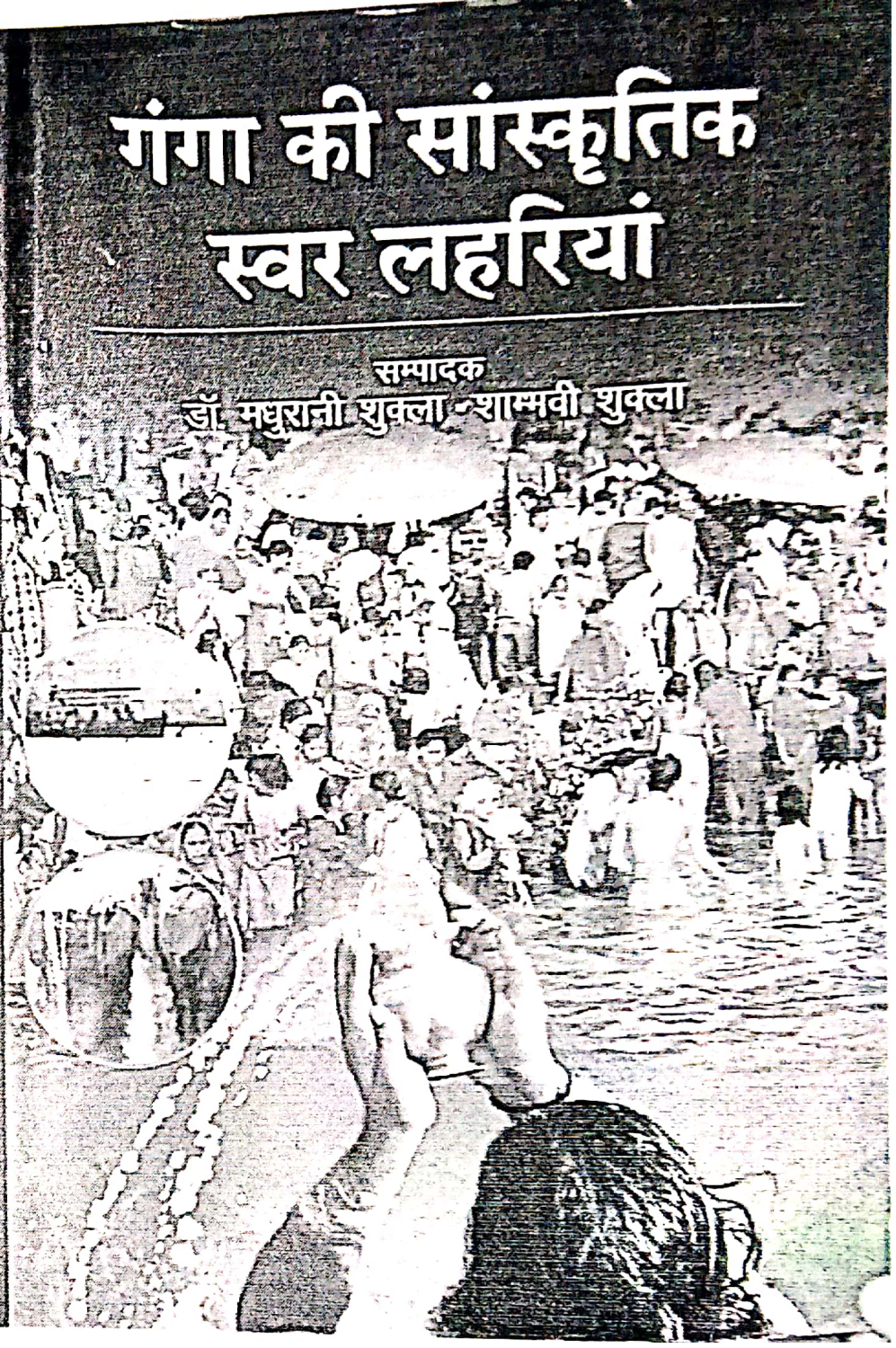

Scanned with OKEN Scanner

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली–110 002
फोन: 2327 0497, 2328 8285
फैक्स : 011–2328 8285
E-mail: kanishka_publishing@yahoo.co.in

गंगा की सांस्कृतिक स्वर लहरियां

प्रथम संस्करण–2020
© सम्पादक
ISBN: 978-93-86556-61-5

भारत में मुद्रित

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 4695/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द–संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned with OKEN Scanner

9. नये संदर्भ में गंगावतरण 47
डॉ. शुभा मालतीय

10. साहित्य में गंगा 50
डॉ. सोनी कुमारी

11. फिल्मी गीतों में गंगा 53
डॉ. तरुण जोशी

12. आर्ष ग्रन्थों में गंगा 57
डॉ. अल्पना अग्रवाल

13. आधुनिक परिदृश्य में जीवनदायिनी "गंगा" का सांस्कृतिक महत्व 63
डॉ. अश्विनी यादव

14. गंगा घाट के प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में 67
डॉ. चित्रा चौरसिया

15. पौराणिक कथाओं से फिल्मी कथानक तक
गंगा के चित्रण का उद्देश्य 72
डॉ. दीपक त्रिपाठी

16. आर्थिक स्रोतों का आधारः गंगा 79
डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी

17. कला के विविध रूपों में निरूपित गंगा की कथा 83
डॉ. एकता विष्ट

18. फिल्म संगीत में गंगा गीतों में प्रचलित रागों का प्रयोग 93
डॉ. हर्षित वैयर

19. धार्मिक व सांस्कृतिक चेतना की प्रतीक माँ गंगा 96
डॉ. जया शर्मा

20. लोकगीतों में गंगा माहात्म्य 101
डॉ. ज्योति विश्वकर्मा

21. पर्यटन व गंगा–सामाजिक, आर्थिक पहलू 106
डॉ. कमला बोरा

22. ओ गंगा बहती हो क्यूँ 113
डॉ. मनदीप कौर

Scanned with OKEN Scanner

22

ओ गंगा बहती हो क्यूँ

डॉ. मनदीप कौर

जैसे ही गंगा की बात आती है तो संगीत प्रेमियों के हृदय में दादा साहिब अवार्ड विजेता, पदम् श्री, पदम् भूषण, भारत रत्न डॉ. भूपेन हज़ारिका की अति उत्कृष्ट कृति "ओ गंगा बहती हो क्यूँ" गीत गूँजने लगता है और यह भी सत्य है कि जब भी डॉ. भूपेन हज़ारिका का यह गीत सुनेगें तो स्वयं को माँ गंगा के करीब महसूस करेंगे। यह गीत उन्हीं के मित्र पोल रोबिसन, जिनसे उनकी मित्रता कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पी. एच. डी. करने के दौरान हुई थी, की कविता "ओल्ड मैन रीवर" से प्रेरित था। उसी दौरान उन्होंने यह महसूस किया कि लोकगीतों लोकधुनों की पहुँच जन–जन तक है और इनके प्रयोग द्वारा हम समाज में फैली हुई कुरीतियों की तरफ सबका ध्यान भी आकर्षित कर सकते हैं। इस गीत को उन्होंने असमिया भाषा में लिखा, स्वयं स्वरबद्ध किया और गाया। उसके बाद बंगाली और अंत में हिन्दी फिल्म "गंगाजल" के लिए गाया।

मानव सभ्यता और संस्कृति का विकास नदियों के किनारे पर हुआ क्योंकि जल के बिना जीवन की कल्पना भी सम्भव नहीं है और जहाँ मीठा जल सहज ही प्राप्त हो जाए वहाँ तो विकास की सम्भावनाएँ और अधिक बढ़ जाती हैं। साथ ही नदियों के किनारे की मिट्टी भी बहुत उपजाऊ होती है। नदियों ने मानव को

Scanned with OKEN Scanner

हमेशा पानी, भोजन, यातायात के साधन उपलब्ध करवाए हैं तथा और भी अनगिनत लाभ पहुँचाए हैं। ऋग्वेद में आर्यों के निवास स्थल को सप्तसिन्धु कहा गया है अर्थात् सात नदियों का देश।

ऋग्वेद में आर्य निवास में प्रवाहित होने वाली दस नदियों का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार हैं : कुम्भा, कुगु, गोमती, सिन्धु, परूष्णी (रावी), शुतुद्री (सतलुज), वितस्ता (झेलम), सरस्वती, यमुना तथा गंगा। भारतीय परम्पराओं में आस्था रखने वाला व्यक्ति जब भी तीर्थ स्नान करता है तो उसके मुख से सहज ही निकल जाता है:

"गंगे च यमुने चैव गोदावरी च सरस्वती
नर्मदे, सिन्धु, कावेरी जलेस्मिन सन्निधि कुरु।।"

भारत के मध्य में नर्मदा और गोदावरी तो दक्षिण में कृष्णा और कावेरी नदियाँ हैं। भारत में एक ओर सिन्धु और उसकी सहायक नदियाँ बहती हैं और दोनों के मध्य गंगा भारत के हृदय में निवास करती है। तीनों ओर उसकी सहायक नदियों से बँधा यह क्षेत्र भारतवर्ष कहलाता है। यही नदियाँ भारतवर्ष की जीवनरेखा हैं जिनका सम्पूर्ण भारत की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान है।

भारतवासियों ने नदियों को सदा माँ का दर्जा दिया और इन सबमें माँ गंगा की महिमा विशेष है। ऐसी मान्यता है कि गंगा स्नान मात्र से जन्मों के पाप धुल जाते हैं। गंगा अपने जल के मूल्यवान गुणों के कारण विशेष मानी जाती है। गंगा इस महाद्वीप (एशिया) की एक प्रमुख नदी ही नहीं अपितु सम्पूर्ण उत्तरभारत की जीवनधारा है, जो भारत के साथ–साथ बांग्लादेश में भी बहती है तथा विश्व की तीसरी सबसे बड़ी नदी है। यह उत्तराखण्ड राज्य में हिमालय में स्थित गंगोत्री से निकलकर विशाल मैदानी इलाके को सम्पन्न करती हुई गंगासागर जिसे आज बंगाल की खाड़ी कहते हैं, में मिल जाती है। अपनी उपजाऊ मिट्टी से गंगा ने अपने मैदानी क्षेत्र में बसने वाली जनसंख्या को समृद्ध बनाया। भारत और बांग्लादेश के कई प्रमुख शहर गंगा के किनारे बसे हैं। हरिद्वार, पटना, कलकत्ता, ढाका गंगा के किनारे बसे प्रसिद्ध शहर हैं।

हिन्दू धर्म में गंगा को देवी और माँ के रूप में पूजा जाता है। विश्व प्रसिद्ध कुम्भ मेला भी इसी गंगा के तट पर ही लगता है। यही नहीं गंगा की महिमा के दर्शन तो भारतीय लोकगीतों और लोकनृत्यों में भी होते हैं। गंगा से प्रेरित बहुत सी लोकधुनें भी लोक में प्रचलित हैं। भारत के प्रत्येक प्रदेश की लोकसंस्कृति और लोकगीतों में गंगा की महिमा का वर्णन मिलता है। गंगा से सम्बन्धित एक हरियाणवी लोकगीत का उदाहरण इस प्रकार है–

Scanned with OKEN Scanner

आधी गंगा मैं जौं बोए अर आधी मैं बो दिए बांस हंसा बोलिए मेरे राम।
के करण ने जौं बोए अर के करण ने बांस हंसा बोलिए मेरे राम।
धरम करण ने जौं बोए अर लाठी टेकण ने बांस, हंसा बोलिए मेरे राम।।

हरिद्वार में गंगा किनारे बसने वाले ढोल सम्प्रदाय के लोग सदियों से गंगा के परम्परागत गीत गाते आ रहे हैं। इसी प्रकार बांग्ला, भोजपुरी, असमिया, बिहारी, हिमाचली आदि भाषाओं के लोकगीतों में गंगा का महिमामण्डन किया गया है।

वेदों और पुराणों में गंगा को तीर्थमयी कहा गया है :

सर्व तीर्थमयी गंगा सर्वदेवमश हरिः।।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं :

"स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी"

अर्थात् नदियों में मैं जाह्नवी (गंगा) हूँ।

पूरे विश्व में ऐसी कोई नदी नहीं है जिसे इतना आदर–सम्मान दिया गया हो। यहाँ तक कहा जाता है कि गंगा नाम का उच्चारण मात्र करने से पापों का नाश होता है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान गंगा के नाम के बिना पूरा नहीं होता। प्रत्येक हिन्दू परिवार में गंगा जल को संचित करके रखा जाता है। मरणासन्न व्यक्ति के मुख में भी गंगाजल ही डाला जाता है। गंगा का मैदानी क्षेत्र धरती का सबसे उपजाऊ क्षेत्र है। गंगा कभी एक जल परिवहन मार्ग हुआ करती थी। पश्चिम बंगाल में आज भी इस जल परिवहन मार्ग का उपयोग किया जाता है। भारत की प्रमुख बंदरगाह कोलकाता बंदरगाह गंगा की शाखा पर स्थित है। गंगा ने माँ बनकर हमें संरक्षण दिया और हमने माँ गंगा को बदले में क्या दिया। गंगा जब गोमुख से निकलती है तो कितनी निर्मल और अमृतमयी होती है परन्तु ऋषिकेश से आगे कानपुर, प्रयाग और वाराणसी तक नहीं पहुँचते–पहुँचते गंगाजल इतना प्रदूषित हो जाता है कि वह पीना तो दूर, स्नान करने के लायक भी नहीं रह जाता।

आजादी के बाद हुए अनियोजित व अनियन्त्रित औद्योगिक विकास के कारण ग्यारह राज्यों की करोड़ों की आबादी की जरुरतें पूरी करने करने वाली गंगा उद्योगों से निकलने वाले जहरीले पदार्थों और इंसानी कचरे से आज इतनी प्रदूषित हो गई है कि आज इसकी गिनती दुनिया की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में होती है।

कैसी व्यथा है दुनिया की सर्वाधिक आदरणीय और सर्वाधिक प्रदूषित नदी। यह कैसा आदर है उसके प्रति जिसे हमने माँ का दर्जा दिया है। लोक में कहा जाता है । पूत कपूत हो सकता है परन्तु माता कुमाता नहीं। आज यही पूत कपूत हो गया है और इसी कपूत और स्वार्थी मानव को फटकार लगाते हुए डॉ. भूपेन हज़ारिका ने गंगा नदी को माध्यम बनाकर, गंगा को सम्बोधित कर अपने आकोश को प्रकट किया–

ओ गंगा बहती हो क्यूँ
विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
करे हाहाकार निःशब्द सदा
ओ गंगा तुम, गंगा बहती हो क्यूँ ?

गंगा को हमने माँ माना है और एक बच्चा जैसे अन्याय देखकर, व्यथित होकर माँ से पूछता है कि ऐसा क्यों है? उसी प्रकार डॉ. भूपेन हज़ारिका माँ गंगा से पूछते हैं इतना भ्रष्टाचार, इतनी अनैतिकता, इतना दुःख, इतनी दरिद्रता देखकर भी तुम कैसे बहती रहती हो :

नैतिकता नष्ट हुई, मानवता भ्रष्ट हुई
निर्लज्ज भाव से बहती हो क्यूँ ?
इतिहास की पुकार, करे हुँकार
ओ गंगा की धार
निर्बल जन को
सबल–संग्रामी, समग्रोगामी
बनाती नहीं हो क्यूँ ?

इस गीत में कहीं न कहीं गंगा का दर्द भी झलकता है जिसे मनुष्य ने स्वार्थी होकर अपनी गन्दगी से भर दिया है। मानव के स्वार्थी स्वभाव को डॉ. भूपेन हज़ारिका अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार प्रकट करते हैं :

व्यक्ति रहे व्यक्ति केंद्रित
सकल समाज व्यक्तित्व रहित
निष्प्राण समाज को छोड़ती न क्यूँ ?

गंगा हर मानव मन में, हर घर में, हर गाँव में, हर प्रदेश में, सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूजनीय है। गंगा की इसी राष्ट्रीय छवि का प्रयोग डॉ. भूपेन हज़ारिका ने अपने इस गीत में किया है। वे गंगा के माध्यम से इस गीत द्वारा क्रान्ति भी लाना चाहते हैं। उन्हें गंगा की आहट में सुर सनाई देते हैं, परन्तु वे सुर हैं क्रान्ति के। उन्हें गंगा की कल–कल में सुनाई देती है क्रान्ति की आवाज–

Scanned with OKEN Scanner

रुदस्विनी क्यूँ न रही ?
तुम निश्चय चिन्तन नहीं
प्राणों में प्रेरणा देती न क्यूँ ?
उनमद अवमी कुरुक्षेत्रग्रमी
गंगे जननी, नव भारत में
भीष्मरूपी सुतसमरजयी जनती नहीं हो क्यूँ ?
विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
करे हाहाकार निःशब्द सदा
ओ गंगा तुम, गंगा बहती हो क्यूँ ?
ओ गंगा तुम, ओ गंगा तुम
गंगा तुम, ओ गंगा तुम,
गंगा..... बहती हो क्यूँ ?

Scanned with OKEN Scanner